



SHRI S. R. D. PRASAD

Veteran Kalarippayattu exponent, Shri S.R.D. Prasad, popularly known as Prasad Gurukkal, is the chieftain of Sree Bharath Kalari, one of the few old training centres of Kalarippayattu, the martial discipline of Kerala.

2. Born on 11th January, 1945 in the Village Pallikunnu, District Kannur, Kerala, Shri Prasad was initiated in Kalarippayattu by his father, Late Shri Chirakkal T. Sreedharan Nair. He was groomed at home and later in Sree Bharath Kalari, founded by his father in 1936 as Rajkumar Kalari which was renamed post-Indian Independence. After graduation, he served as an officer in the Rubber Board and then as a Manager of a rubber estate while continuing the practice and dissemination of his art. Since 1998, he has been the full-time guru of Sree Bharath Kalari. Still teaching hundreds of young boys and girls, he established himself as an exponent of Kalarippayattu.

3. Along with his disciples, Shri Prasad has given numerous lectures and demonstrations of this art at various State, National and international venues. Some of them are the Railway Protection Force celebrations in 2000, World Book Fair in 2008, Sangeet Natak Akademi, Delhi in 2012 (Health and Harmony in Asian Systems of Medicines), Yoga Parva of Sangeet Natak Academy in 2015, Presidency College Kolkata, Embassy in Belgium and Luxembourg in 2017 and Bhuvaneswar in 2018. He served as a member of the Syllabus Formation Committee of Mumbai University for devising the postgraduate course 'Movement Science' and the Diploma course 'Dance and Fitness'. Additionally, he prepared the syllabus for the Diploma in Kalarippayattu Course at Kannur University and served as the visiting faculty. He was also the visiting faculty for the Dance and Fitness Course at Mumbai University.

4. Shri Prasad has authored various books disseminating the legacy of Kalarippayattu. Those are Otta (2004), Kalariyile Kala (2010), which is the biography of his father and guru, Maippayattu (2012), published under a two-year Senior Fellowship of the Central Ministry of Culture) and Marapidichu Kuntha Payattu (2019). Bharatha Kandan (2009) is a novel based on the epic Ramayana. To his credit, there are also many articles in various journals explaining the influence of Kalarippayattu on other art forms of Kerala and the philosophy behind this comprehensive martial discipline. He is also the co-editor of an English Book on Kalarippayattu. Besides, various television channels such as the Doordarshan carried out interviews and features on him.

5. Shri Prasad has received many accolades for his contributions to this martial arts tradition. Among them are the Gurupooja Award of Kerala Folklore Akademi (2012), Kendra Sangeeth Nataka Akademi Puraskar (2015), the Award for Best Book (2018) from Kerala Folklore Academy and the coveted Fellowship of Kerala Folklore Akademi (2021).



श्री एस. आर. डी. प्रसाद

प्रसाद गुरुकुल के नाम से प्रसिद्ध वरिष्ठ कलारिप्पयट्टू पारंगत श्री एस.आर.डी. प्रसाद केरल की मार्शल शाखा कलारिप्पयट्टू के कुछ पुराने प्रशिक्षण केंद्रों में से एक श्री भारत कलारी के प्रमुख हैं।

2. 11 जनवरी, 1945 को पल्लीकुन्नु गांव, जिला कन्नूर, केरल में जन्मे, श्री प्रसाद ने अपने पिता स्वर्गीय श्री चिरकल टी. श्रीधरन नायर से कलारिप्पयट्टू का प्रशिक्षण लिया। उनकी कला को पहले घर पर और बाद में श्री भारत कलारी में निखारा गया, जिसकी स्थापना उनके पिता ने 1936 में राजकुमार कलारी के रूप में की थी और इसका नाम भारत की आजादी के बाद बदल दिया गया। स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, उन्होंने अपनी कला का अभ्यास और प्रचार-प्रसार जारी रखते हुए, रबर बोर्ड में एक अधिकारी के रूप में और फिर एक रबर एस्टेट के प्रबंधक के रूप में काम किया। 1998 से, वह श्री भारत कलारी में पूर्णकालिक गुरु हैं। अब भी सैकड़ों युवा लड़कों-लड़कियों को पढ़ाते हुए, उन्होंने खुद को कलारिप्पयट्टू के प्रतिपादक के रूप में स्थापित किया।
3. श्री प्रसाद ने अपने शिष्यों के साथ, विभिन्न राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्थानों पर इस कला के बारे में कई व्याख्यान और प्रस्तुतियां दी हैं। उनमें से कुछ हैं, सन् 2000 में रेलवे सुरक्षा बल समारोह, 2008 में विश्व पुस्तक मेला, 2012 में संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली (हेल्थ एंड हारमनी इन एशियन सिस्टम्स ऑफ मेडिसिन), 2015 में संगीत नाटक अकादमी का योग पर्व, 2017 में प्रेसीडेंसी कॉलेज कोलकाता, बेल्जियम और लक्ज़मबर्ग स्थित दूतावास और 2018 में भुवनेश्वर। उन्होंने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 'मूवमेंट साइंस' और डिप्लोमा पाठ्यक्रम 'डांस एंड फिटनेस' तैयार करने के लिए मुंबई विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम निर्माण समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया। इसके अलावा, उन्होंने कन्नूर विश्वविद्यालय में कलारिप्पयट्टू पाठ्यक्रम में डिप्लोमा के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया और विजिटिंग फैकल्टी के रूप में काम किया। वह मुंबई विश्वविद्यालय में डांस और फिटनेस कोर्स के विजिटिंग फैकल्टी भी थे।
4. श्री प्रसाद ने कलारिप्पयट्टू की विरासत को आगे बढ़ाने वाली कई पुस्तकों की रचना की है। वे हैं ओट्टा (2004), कलारियिले कला (2010), (जो उनके पिता और गुरु की जीवनी है), मैप्पयट्टू (2012), (केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की दो वर्षीय वरिष्ठ फेलोशिप के तहत प्रकाशित) और मारापिडिचु कुंथा पयाट्टू (2019)। भरत कंदम (2009) रामायण महाकाव्य पर आधारित उपन्यास है। उन्होंने केरल के अन्य कला रूपों पर कलारिप्पयट्टू के प्रभाव और इस व्यापक मार्शल आर्ट्स के पीछे के दर्शन को समझाते हुए विभिन्न पत्रिकाओं में कई लेख भी लिखे हैं। वह कलारिप्पयट्टू पर एक अंग्रेजी पुस्तक के सह-संपादक भी हैं। इसके अलावा, दूरदर्शन जैसे विभिन्न टेलीविजन चैनलों ने उन पर साक्षात्कार और फीचर दिखाए।
5. श्री प्रसाद को इस मार्शल आर्ट परंपरा में उनके योगदान के लिए कई सम्मान मिले हैं। इनमें केरल लोकगीत अकादमी (2012) का गुरुपूजा पुरस्कार, केंद्र संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2015), केरल लोकगीत अकादमी से सर्वश्रेष्ठ पुस्तक (2018) का पुरस्कार और केरल लोकगीत अकादमी (2021) की प्रतिष्ठित फेलोशिप प्रमुख हैं।